वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा

***बिंदु संजीव, निजी सचिव**
*भा कृ अनु प- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची – 682018
*ई-मेल : binducmfri@gmail.com

प्रस्तावना

"वसुधैव कुटुंबकम", एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ है "दुनिया" एक परिवार है। यह प्राचीन भारतीय कहावत यह विचार व्यक्त करती है कि पूरी दुनिया आपस में जुड़ी हुई है और सभी लोग एक ही वैश्विक परिवार का हिस्सा हैं। यह सार्वभौमिक भाईचारे की बात करता है और इस विचार को बढ़ावा देता है कि हमें हर किसी के साथ दयालुता और सहानुभूति के साथ व्यवहार करना चाहिए, चाहे उनकी राष्ट्रीयता, नस्ल या धर्म कुछ भी हो। इसका उपयोग अक्सर विभिन्न संस्कृतियों और राष्ट्रों के बीच वैश्विक शांति और समझ के महत्व पर ज़ोर देने के लिए किया जाता है। यह विचार हमें सिखाता है कि पृथ्वी पर हर कोई एक बड़े वैश्विक परिवार के सदस्य की तरह है। भारत का यह प्राचीन दर्शन हमें शांति और सद्भाव का लक्ष्य रखते हुए सभी के साथ दयालुता और सम्मान के साथ व्यवहार करना सिखाता है। "वसुधैव कुटुंबकम" वाक्यांश प्राचीन भारतीय ग्रंथों, विशेष रूप से महा उपनिषद और हितोपदेश से लिया गया है। महा उपनिषद् में यह श्लोक आता है :-

दलाई लामा

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम ॥

इस श्लोक का अर्थ है–यह मेरा है, यह पराया है ऐसी गणना छोटे चित्त वालों की होती है। जबकि उदार चित्त वाले तो पूरे विश्व को ही अपना परिवार मानते हैं।ये ग्रंथ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और दार्शनिक विरासत का हिस्सा हैं, और यह वाक्यांश इन्हीं स्रोतों से लिया गया है। यह इन प्राचीन ग्रंथों में पाए जाने वाले स्थायी मूल्यों और ज्ञान को दर्शाता है, जो दुनिया को एक परस्पर जुड़े हुए परिवार के रूप में मानने पर ज़ोर देता है।

वसुधैव कुटुम्बकम का महत्व

आज की दुनिया में, जहाँ सब कुछ इतना जुड़ा हुआ है, यह फिलोसॉफी और भी महत्वपूर्ण है। हमारी दुनिया एक बड़े पड़ोस की तरह है जहाँ राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच की रेखाएँ धुंधली होती जा रही हैं। इसलिए, हमारे लिए वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांतों का पालन करना और एक ऐसी दुनिया के लिए प्रयास करना महत्वपूर्ण है जहाँ सभी के साथ उचित और सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए। भारत ने हमेशा से ही अपनी परम्परा, संस्कृति को पूरे विश्व के सामने कायम रखा है। 14 वां दलाई लामा, जो तिब्बती बौद्ध धर्म के महान गुरु हैं, ने स्वतन्त्रता और आत्म- नियंत्रण की लड़ाई लड़ी है। अभयार्थी के रूप में भारत के धर्मशाला में उन्होंने अपने आश्रम को स्थापित किया है। प्रेम,करुणा एवं समरसता के महागुरु को सुरक्षा की छत्रछाया प्रदान करने के पीछे का तत्व 'वसुधैव कुटुंबकम' ही है, नहीं है तो क्या हो सकता है?

यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी सजा हुआ है । जनता की सर्वोच्च प्रतिनिधि सभा में यह तत्व इसलिए दर्शाया गया है कि जनता को समान स्वीकार

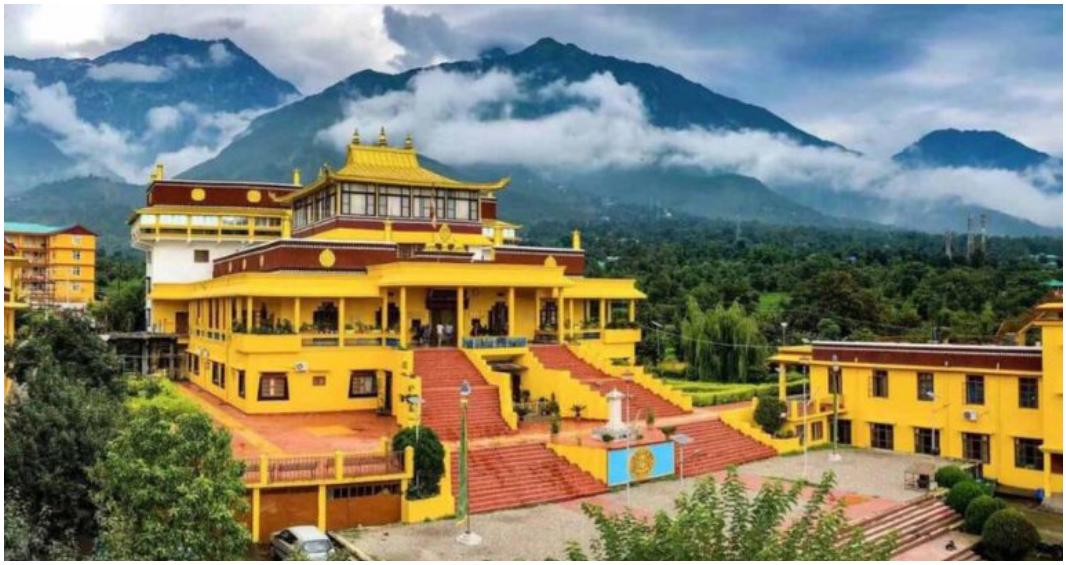

धर्मशाला

करने का मनोभाव नेताओं के मन में होना चाहिए। एक कहावत है न –" जैसा राजा तथा प्रजा"- वसुधैव कुटुम्बकम का सन्देश राजा के मन में नहीं है तो प्रजा के मन में कैसे आएगा। शासन करने वालों को भारतीय परंपरा, संस्कृति के बारे में अवगत होने पर ही राष्ट्र की प्रगति होगी। राष्ट्र की प्रगति से ही जनता की प्रगति होगी।

यह एक-दूसरे के साथ दयालुता, सम्मान और समझ के साथ व्यवहार करने को प्रोत्साहित करता है। यह अवधारणा इस बात पर ज़ोर देती है कि मतभेदों के बावजूद, हम सभी जुड़े हुए हैं और हमें शांति और एकता के लिए मिलकर काम करना चाहिए। आज की दुनिया में, जहाँ ज़ोर हम गरीबी और संघर्ष जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, वसुधैव कुटुंबकम का संदेश और भी महत्वपूर्ण है। इससे हमें हमारी विविधता की सराहना करने की सहायता होती है। यह दुनिया को सभी के लिए एक बेहतर जगह बनाने के लिए एक-दूसरे के साथ सहयोग करने की याद दिलाता है। ये सिद्धांत हमें बेहतर भविष्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं। टीम वर्क, सहयोग को प्रोत्साहित करके और एक-दूसरे के प्रति सम्मान दिखाकर, हमें समस्याओं को सुलझाने में मदद मिलती है। इसकी सहायता से हम दुनिया को अधिक संतुलित और शांतिपूर्ण बनाने पर काम कर सकते हैं। वसुधैव कुटुंबकम हमें याद दिलाता है कि प्रत्येक व्यक्ति सभी के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने में भूमिका निभाती है।

हम एक ऐसी दुनिया में जी रही है जहाँ कई विरोधाभासों से भरी हुई है। वैश्वीकरण और तकनीकी कौशल की शक्तियाँ हमें एक साथ खींचती हैं, जबकि युद्ध, गरीबी और जलवायु परिवर्तन की छायाएँ जनता में भिन्नता पैदा करती है। तत्काल, दुनिया समाधान माँग रही है। इस जटिल उलझन में भारत अपनी समृद्ध और प्राचीन सभ्यता के साथ, एक शक्तिशाली उपाय प्रस्तुत करता है–वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा। वर्तमान समय में जब दुनिया विभिन्न प्रकार के संघर्षों और चुनौतियों का सामना कर रही है, वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हमें प्रेरित करता है कि हम सभी मानवता के कल्याण के लिए मिलकर काम करें। जब हम इस विचारधारा को अपनाते हैं, तो हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं जहाँ हर व्यक्ति को सम्मान, प्रेम और समान अवसर मिले।

वसुधैव कुटुंबकम की प्रासंगिकता

वसुधैव कुटुंबकम का विचार आज बहुत महत्वपूर्ण है। यह इस बारे में बात करता है कि दुनिया में हर कोई कैसे जुड़ा हुआ है, चाहे वे कहीं से भी आए हों या किसी भी चीज़ में विश्वास करते हों। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना में लोग एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और करुणा का एहसास करके शांति को बढ़ावा देते हैं। जिससे अधिक सहयोग और कम लड़ाई हो सकती है।यह दर्शन हमें एक-दूसरे के मतभेदों का सम्मान करने में सहायता करती है। इससे हम संघर्षों को कम कर सकते हैं। यह दुनिया को अधिक सामंजस्यपूर्ण स्थान बनाने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। वसुधैव कुटुम्बकम हमें न केवल अपने लिए बल्कि पूरे विश्व की भलाई के लिए जिम्मेदारी

लेना सिखाता है। यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति जो करता है उसका प्रभाव सभी पर पड़ सकता है, इसलिए हम सभी को ऐसे तरीके से कार्य करना चाहिए जिससे सभी को लाभ हो। इसके अतिरिक्त, यह दर्शन इस बात पर ज़ोर देकर स्थिरता को बढ़ाता है कि एक व्यक्ति की भलाई दूसरों की भलाई से जुड़ी हुई है। यह हमें सभी जीवों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसका आनंद उठा सकें।

वर्ष 2023 में नई दिल्ली में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन का विषय "वसुधैव कुटुंबकम" है। यह सभी देशों के परस्पर जुड़ाव और जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानताओं और वैश्विक स्वास्थ्य संकट जैसी आम चुनौतियों से निपटने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है। यह विषय एक अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण दुनिया की दृष्टि को बढ़ावा देता है, जहाँ राष्ट्र मानवता की सामूहिक भलाई के लिए सहयोग करते हैं। भारत ने G20 के अध्यक्ष के रूप में दुनिया के सभी नागरिकों को एक साथ लाने और दुनिया को सभी के लिए बेहतर बनाने के लिए 'वसुधैव कुटुंबकम' – एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य (One Earth, One Family, One Future) का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

कोविड-19 के कारण उत्पन्न स्वास्थ्य संकट से प्रभावित अशांत वर्षों में, इस सिद्धांत ने भारत के विदेश मंत्रालय के नेतृत्व में "वैक्सीन मैत्री" अभियान में अपना सबसे गहरा रूप लिया, जिसके तहत भारत ने फरवरी 2022 तक 98 देशों को कोविड-19 टीके उपहार में दिए और आपूर्ति की। भारत में आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, ऐसे में वसुधैव कुटुम्बकम का विचार दुनिया भर के देशों और लोगों के बीच गूंज सकता है। अफ्रीका

का उबुंटू दर्शन, जिसका अर्थ है 'मैं हूँ क्योंकि हम हैं', हमारे अस्तित्व की अंतर्निहित अन्योन्याश्रितता को भी उजागर करता है। मालागासी शब्द 'फिहावानाना' में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के प्राणियों के बीच रिश्तेदारी, दोस्ती, सद्भावना की अवधारणा शामिल है। यह इस विश्वास से आता है कि हम सभी एक ही रक्त के हैं और हम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह अंततः हम पर भी प्रतिबिंबित होगा; और हमें दुनिया की भलाई के लिए सद्भावना के बारे में सक्रिय होना चाहिए।वसुधैव के मूल में वसुधा है, हमारी पृथ्वी है, और इसलिए, वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा का विस्तार पर्यावरण और पूरे ग्रह के लिए भारत की चिंताओं को उजागर करता है।

निष्कर्ष:

वसुधैव कुटुम्बकम केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। इसे अपनाकर हम अपने और दूसरों के जीवन को बेहतर बना सकते हैं। यह विचारधारा हमें यह सिखाती है कि जब हम सब मिलकर एक परिवार की तरह रहेंगे, तभी हम सच्ची प्रगति और शांति को प्राप्त कर सकते हैं। सरल शब्दों में, वसुधैव कुटुंबकम एकता, सम्मान और ज़िम्मेदारी को बढ़ावा देता है। इसमें दुनिया में शांति, समझ और स्थिरता लाने की शक्ति है।अंत में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मंगलेश डबराल की कविता ' नए युग में शत्रु' नामक कविता की पंक्तियाँ आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहती हूँ

हमारा शत्रु कभी हमसे नहीं मिलता सामने नहीं आता

हमें ललकारता नहीं

हालांकि उसके आने-जाने की आहट हमेशा बनी रहती है

कभी-कभी उसका संदेश आता है कि अब कहीं शत्रु नहीं है

हम सब एक दूसरे के मित्र हैं

आपसी मतभेद भुलाकर आइए हम एक ही प्याले से पिएँ

वसुधैव कुटुंबकम् हमारा विश्वास है

धन्यवाद और शुभरात्रि।

आइए, हम सब मिलकर वसुधैव कुटुंबकम के इस महान संदेश को अपने जीवन में अपनाएँ/दुनिया को एक बेहतर और सुखद स्थान बनाएँ।